अध्याय - 01

# मानव भूगोल: प्रकृति एवं क्षेत्र

## पाठ की रुपरेखा :-

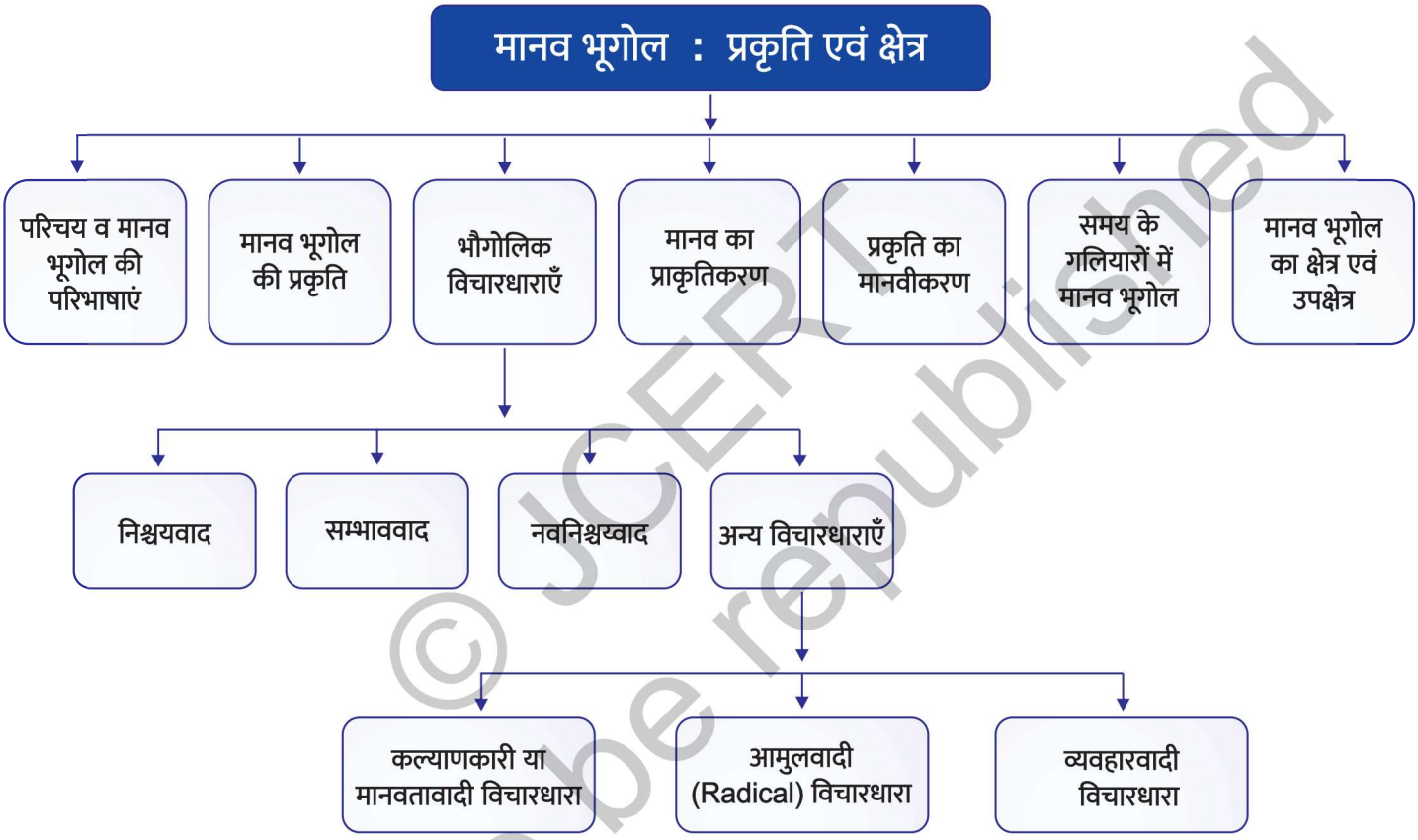


© JCERT not to be republished

## 1. मानव भूगोल:-

मानव भूगोल, भूगोल की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमे जनसंख्या, प्रजाति, जनजाति, मानव संसाधन, मानव बस्ती, मानवीय क्रियाएं यथा कृषि, उद्योग, परिवहन, संचार, धर्म, भाषा, जाति इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

## 2. मानव भूगोल की परिभाषाएँ:-

विभिन्न विद्वानों ने मानव भूगोल को विभिन्न तरीके से परिभाषित किया है, जो निम्न लिखित है :-

- रेटजेल के अनुसार "मानव भूगोल मानव समाजो और धरातल के बीच संबंधो का संश्लेषित अध्ययन है।"
- एलेन चर्चिल सेम्प्ल के अनुसार "मानव भूगोल अस्थिर पृथ्वी और क्रियाशील मानव के बीच परिवर्तनशील संबंधो का अध्ययन है।"
- पॉल विडाल डी ला ब्लाश के अनुसार "हमारी पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमो तथा इस पर रहने वाले जीवों के मध्य संबंधो के अधिक सन्श्लेषित ज्ञान से उत्पन्न संकल्पना है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं में रेटजेल ने मानव भूगोल के संश्लेषण, एलेन चर्चिल सेम्पल ने मानव और पृथ्वी के संबंधों की गत्यात्मकता, पॉल विडाल डी ला बलाश ने पृथ्वी और मनुष्य के बीच अन्तर्सम्बन्धो पर प्रकाश डाला है।

## 3. मानव भूगोल की प्रकृति:-

- मानव भूगोल भौतिक पर्यावरण तथा मानव जनित सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण के अंतर्संबंधो का अध्ययन उनकी परस्पर अन्योन्यक्रिया के द्वारा करता है मानव भूगोल के अध्ययन की विषयवस्तु शाश्वत न होकर निरंतर परिवर्तनशील है।
- मानव भूगोल अन्य सामाजिक विषयों से अंतर्संबंधित है इसलिए मानव भूगोल की प्रद्कृति अंतर्विषयक भी है

## 4. भौगोलिक विचारधाराएँ:-

- मानव भुगोल के अध्ययन की अनेक विधियाँ है जिन्हें उपागम भी कहा जाता है। भौगोलिक विचारधाराओं में निश्चयवाद, संभववाद, नवनिश्चयवाद महत्वपूर्ण हैं, इसके अलावे कल्याणकारी या मानवतावादी विचारधारा, आमुलवादी विचारधारा, एवं व्यवहारवादी विचारधारा प्रमुख है।

© JCERT not to be republished

## 5. निश्चयवाद विचारधारा:-

5.1 यह सबसे प्राचीन विचारधारा है जिसमे प्रकृति (वातावरण) को श्रेष्ठ स्थान तथा मानव को गौण स्थान स्थान प्रदान किया गया है इसमें मानव प्रकृति का दास है प्रकृति को माता का दर्जा दिया गया है।

5.2 प्राचीनकाल में निश्चयवाद की विचारधारा का प्रवर्तक हिप्पोक्रेटस (यूनानी) को माना जाता है परन्तु आधुनिक काल में संकल्पना के रूप में विकसित करने का श्रेय जर्मन भूगोलवेता रैटज़ेल को दिया जाता है । उन्हें निश्चयवाद संकल्पना का प्रतिपादक भी कहा जाता है।

5.3 प्रारंभ में तकनीकी ज्ञान कम होने के करण मानव का विकास उसके वातावरण द्वारा ही होता था वातारण ही जीवन -यापन, रहन -सहन के ढंग को निर्धारित करता है।

5.4 मानव के शारीरिक लक्षणों पर वातावरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एलेन चर्चिल सेम्पल ने तो यहाँ तक कहा कि 'मनुष्य पृथ्वी तल की उपज है' मनुष्य के भोजन वस्त्र मकान व आर्थिक क्रिया पर वातावरण का प्रभाव स्पष्ट रुप से परिलक्षित होता है।

## 6. संभववाद विचारधारा:-

6.1 संभववाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांसिसी भूगोलवेत्ता लुसियन फेब्रे ने किया था लेकिन इसे संकल्पना के रूप में विडाल डी ला ब्लास (फ्रांसिसी) ने प्रतिपादित किया।

6.2 इस संकल्पना में मानव को श्रेष्ठ स्थान एवं प्रकृति को गौण स्थान प्रदान किया गया है। तकनिकी ज्ञान में वृद्धि के साथ मानव प्रकृति के साथ छेड़छाड़ प्रारंभ कर दिया और मानव यह समझने लगा की प्रकृति के तत्वों को चुनने के लिए मानव स्वतंत्र है

6.3 मानव निष्क्रिय नही है बल्कि प्रत्येक गतिविधि में उसकी सक्रिय भूमिका विधमान है प्रकृति मानव के समक्ष अनेक संभावनाएं पैदा करती है मानव इन संभावनाओं को चयन के लिए स्वंतंत्र है इसका उपयोग करे या न करे यह पूर्णता मानव पर निर्भर करता है

6.4 प्रकृति एक सलाहकार से अधिक कुछ भी नही है। यह मानव पर निर्भर करता है कि प्रकृति द्वारा दिए गए सलाह को मने या माने।

© JCERT not to be republished

6.5 मानव आज ध्रुवीय प्रदेशों में भी रहने में समर्थ, वायुयान का निर्माण कर अनंत आकाश में उड़ने, जलयान निर्माण कर समुद्र की गहराईयों में गोता लगाने में समर्थ हो गया है इसके साथ ही कम्प्यूटर के विकास के साथ ही सम्पूर्ण विश्व सिमटकर एक गांव बन गया है, जो सम्भववादी विचारधारा को पारिलक्षित करता है।

## 7. नव निश्चयवाद:-

7.1 नव निश्चयवाद संकल्पना के प्रतिपादक ग्रिफिथ टेलर हैं। यह निश्चयवाद और सम्भाववाद के बीच मध्यममार्ग का अनुसरण करता है।

7.2 नव निश्चयवाद संकल्पना को रुको और जाओ निश्चयवाद, वैज्ञानिक निश्चयवाद या आधुनिक निश्चयवाद के नाम से भी जानते हैं।

7.3 इस संकल्पना में मानव एवं प्रकृति के बीच मध्यम मार्ग का अनुसरण किया गया है इसमें न तो प्रकृति, मनुष्य पर पूरा नियंत्रण रखता है, न ही मनुष्य प्रकृति का विजेता है।

7.4 मनुष्य के विकास के अनेक साधन प्रकृति में उपलब्ध है, किन्तु उपयोग की एक निश्चित सीमा भी है। सीमा पर करने का अर्थ आपदाओं को आमंत्रित करना।

7.5 यह विचारधारा मानव के प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए विकास पर बल देता है।

## 8. कल्याणकारी या मानवतावादी विचारधारा:-

मानव भूगोल की कल्याणकारी या मानवतावादी विचारधारा का सम्बन्ध मुख्यतः लोगों के सामाजिक कल्याण के विभिन्न पक्षों से है इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास जैसे आधारभूत पक्षों पर विशेष बल देता है।

## 9. आमुलवादी (रेडिकल) विचारधारा:-

यह विचारधारा मुख्यतः मार्क्स के सिद्धांतो से प्रेरित है। इसमें समकालीन सामाजिक समस्यायों यथा गरीबी बेरोजगारी, सामाजिक विषमता आदि का सम्बन्ध पूंजीवाद के विकास को बताया गया है।

## 10. व्यवहारवादी विचारधारा:-

इस विचारधारा में मुख्यतः मानव के व्यावहारिक पहलुओं पर विशेष बल दिया

© JCERT not to be republished

जाता है। इसमें मानव के प्रत्यक्ष अनुभव के साथ साथ मानव जातीयता प्रजाति धर्म इत्यादि पर आधारित सामाजिक संवर्गो के दिक्काल बोध पर ज्यादा जोर दिया गया है।

## 11. मानव का प्रकृतिकरण:-

मानव का प्राकृतिकरण का तात्पर्य मानव पर प्रकृति के प्रभाव से है। यह निश्चयवाद की संकल्पना से प्रेरित है जब से मानव ने पृथ्वी पर जन्म लिया है तब से वह निरंतर भौतिक पर्यावरण से अन्योन्य क्रिया करता आया है। मानव प्रौद्योगिकी का विकास करता है और उसकी सहायता से भौतिक पर्यावरण के साथ अंतक्रिया करता है। मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल में प्रौधोगिकी निम्न स्तर पर विकसित थी और मानवीय क्रियाकलापों पर प्राकृतिक पर्यावरण के तत्वों का प्रभाव अधिक था। प्राकृतिक शक्तियां मानवीय क्रियाकलापों का मार्गदर्शन करती थी मानव प्रकृति की सुनता था, उसकी आज्ञा का पालन करता था उसकी प्रचंडता से भयभीत होता था और उसकी पूजा करता था। अतः आदिमानव लगभग पूर्णतया प्राकृतिक पर्यावरण की शक्तियों द्वारा नियंत्रित था। ऐसी परिस्थिति जिसमें आदिमानव की अपेक्षा पर्यावरण की शक्तियां अधिक प्रबल होती हैं, उसे पर्यावरणीय निश्चयवाद कहते हैं। पर्यावरणीय निश्चयवाद की स्थिति को भारत के ऐसे कई भागों में देखा जा सकता है, जहां पर आदिवासी लोग रहते हैं। इन क्षेत्रों में मानव सतत पोषण हेतु प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर करता है ऐसे समाज में भौतिक पर्यावरण माता प्रकृति का रूप धारण करता है। वह अवस्था जिसमें मानव पर प्रकृति का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है मानव का प्राकृतिकरण कहलाती है।

## 12. प्रकृति का मानवीकरण:-

मानव ने पर्यावरण और उसके क्रियाकलापों को प्रभावित करने वाली शक्तियों को समझना शुरू कर दिया ज्यों ज्यों सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास होता गया त्यों -त्यों प्रौधोगिकी उन्नति करती गयी। इसके परिणामस्वरुप मानव आभाव की अवस्था से स्वतंत्रता की अवस्था की और अग्रसर हुआ मानव प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों का अधिक बुधिमत्ता से प्रयोग करने लगा आज मानवीय क्रियाकलापों की छाप सर्वत्र दिखाई देती है। आज मानव की पहुँच समुद्र की अनंत गहराइयों में अंतरिक्ष में कृत्रिम उपग्रह अन्तरिक्ष स्टेशनों का निर्माण पर्वतों पर हिल स्टेशन का निर्माण आदि मानव की प्रकृति पर जीत के कुछ उदाहरण है। जब मानव प्रकृति द्वारा प्रदत्त अवसरों का लाभ उठाता है तो उसके क्रियाकलापों की छाप प्राकृतिक पर्यावरण पर पड़ती है। इस परिस्थिति को प्रकृति का मानवीकरण कहते हैं

© JCERT not to be republished

**तालिका 1.1: मानव भूगोल की बृहत् अवस्थाएँ और प्रणोद**

| समय अवधि | उपागम | वृहत् लक्षण |
|---|---|---|
| आरंभिक उपनिवेश युग | अन्वेषण और विवरण | साम्राज्य और व्यापारिक रुचियों ने नए क्षेत्रों में खोजों व अन्वेषणों को प्रोत्साहित किया। क्षेत्र का विश्व ज्ञानकोपिय विवरण भूगोलवेत्ताओं द्वारा वर्णन का महत्त्वपूर्ण पक्ष बना। |
| उत्तर उपनिवेश युग | प्रादेशिक विश्लेषण | प्रदेश के सभी पक्षों के विस्तृत वर्णन किए गए। मत यह था कि सभी प्रदेश पूर्ण अर्थात् पृथ्वी के भाग हैं, अतः इन भागों की पूरी समझ पृथ्वी पूर्ण रूप से समझने में सहायता करेगी। |
| अंतर-युद्ध अवधि के बीच 1930 का दशक | क्षेत्रीय विभेदन | एक प्रदेश अन्य प्रदेशों से किस प्रकार और क्यों भिन्न है यह समझने के लिए तथा किसी प्रदेश की विलक्षणता की पहचान करने पर बल दिया जाता था। |
| 1950 के दशक के अंत से 1960 के दशक के अंत तक | स्थानिक संगठन | कंप्यूटर और परिष्कृत सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के लिए विशिष्ट मानचित्र और मानवीय परिघटनाओं के विश्लेषण में प्रायः, भौतिकी के नियमों का अनुप्रयोग किया जाता था। इस प्रावस्था को विभिन्न मानवीय क्रियाओं के मानचित्र योग्य प्रतिरूपों की पहचान करना इसका मुख्य उद्देश्य था । |
| 1970 का दशक | मानवतावादी, आमूलवादी और व्यवहारवादी विचारधाराओं का उदय । | मात्रात्मक क्रांति से उत्पन्न असंतुष्टि और अमानवीय रूप से भूगोल के अध्ययन के चलते मानव भूगोल में 1970 के दशक में तीन नए विचारधाराओं का जन्म हुआ। इन विचारधाराओं के अभ्युदय से मानव भूगोल सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ के प्रति अधिक प्रासंगिक बना। इन विचारधाराओं की थोड़ी और जानकारी के लिए नीचे दिए गए बॉक्स का अवलोकन करें। |
| 1990 का दशक | भूगोल में उत्तर-आधुनिकवाद | वृहत् सामान्यीकरण तथा मानवीय दशाओं की व्याख्या करने वाले वैश्विक सिद्धांतों की प्रयोज्यता पर प्रश्न उठने लगे। अपने आप में प्रत्येक स्थानीय संदर्भ की समझ के महत्त्व पर जोर दिया गया। |

## 13. समय के गलियारों से:-

मानव भूगोल का इतिहास बहुत लम्बा है। यद्यपी समय के साथ इसे सुस्पष्ट करने वाले उपागमो में परिवर्तन आते रहे हैं। उपागमो में यह गत्यात्मकता इस विषय की परिवर्तनशीलता का सूचक है । खोज के युग के पहले विभिन्न समाजो के बीच अंतर्क्रिया लगभग नगण्य थे और एक दूसरे का सम्बन्ध का ज्ञान सीमित था । पंद्रहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में खोज एवं यात्राओं का युग शुरू हुआ और अज्ञात समाजो के सम्बन्ध में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त होने लगा । खोजों के बाद उपनिवेश का युग प्रारंभ हुआ । उपनिवेशवाद के युग से लेकर आधुनिक युग तक मानव भूगोल में क्रमशः उतरोत्तर उन्नति हुई । इसे नीचे दिये गए तालिका से समझा जा सकता है ।

© JCERT not to be republished

## 14. मानव भूगोल के क्षेत्र एवं उपक्षेत्र:-

मानव भूगोल अत्यधिक अंतर - विषयक विषय है क्योंकि यह मानव और प्राकृतिक पर्यावरण के अंतर्संबंधो का अध्ययन करता है। यह समाजिक विज्ञानों के सहयोगी विषयों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध विकसित करता है। ज्यो-ज्यों ज्ञान का विस्तार होता है त्यों-त्यों मानव भूगोल के नए उपक्षेत्रो का विकास होता है और मानव भूगोल के नए आयाम जुड़ते रहते हैं। मानव भूगोल के क्षेत्रों, उपक्षेत्रों तथा सामाजिक विज्ञानं के सहयोगी अनुशासनों से अन्तरापृष्ठ सम्बन्ध को नीचे दिए गए तालिका से समझा जा सकता है।

**तालिका 1.2: मानव भूगोल और सामाजिक विज्ञानों के सहयोगी अनुशासन**

| मानव भूगोल के क्षेत्र | उपक्षेत्र | सामाजिक विज्ञानों के सहयोगी अनुशासकों से अंतरा पृष्ठ |
|---|---|---|
| सामाजिक भूगोल | - | सामाजिक विज्ञान-समाजशास्त्र |
| | व्यवहारवादी भूगोल | मनोविज्ञान |
| | सामाजिक कल्याण का भूगोल | कल्याण अर्थशास्त्र |
| | अवकाश का भूगोल | समाजशास्त्र |
| | सांस्कृतिक भूगोल | मानवविज्ञान |
| | चिकित्सा भूगोल | महामारी विज्ञान |
| नगरीय भूगोल | - | नगरीय अध्ययन और नियोजन |
| राजनीतिक भूगोल | - | राजनीति विज्ञान |
| | निर्वाचन भूगोल | - |
| | सैन्य भूगोल | सैन्य विज्ञान |
| जनसंख्या भूगोल | - | जनांकिकी |
| आवास भूगोल | - | नगर/ग्रामीण नियोजन |
| अर्थिक भूगोल | - | अर्थशास्त्र |
| | संसाधन भूगोल | संसाधन अर्थशास्त्र |
| | कृषि भूगोल | कृषि विज्ञान |
| | उद्योग भूगोल | औद्योगिक अर्थशास्त्र |
| | विपणन भूगोल | व्यवसायिक अर्थशास्त्र, वाणिज्य |
| | पर्यटन भूगोल | पर्यटन और यात्रा प्रबंधन |
| | अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का भूगोल | अंतर्राष्ट्रीय व्यापर |

© JCERT not to be republished